लेख

विकलांगता और यौनिकता

अनीता घई

जेंडर विकलांगता तक पहुंचता है; विकलागंता वर्ग के इर्द गिर्द लिपटी होती है; वर्ग शोषण के ख़िलाफ़ ज़ोर लगाता है; शोषण यौनिकता में बसा-फंसा है; यौनिकता नस्ल के साथ गुंथी है... और यह सब कुछ एक मानव शरीर के ऊपर लदा हुआ है। —ऐली क्लैर

अपने लिए मेरे कुछ सवाल: ऐसा ज़रूरी क्यों है कि एक विकलांग व्यक्ति किसी दूसरे अपंग व्यक्ति से ही या फिर अपने ही तरह विकलांगता वाले इंसान से ही प्यार कर सकता है? ऐसा क्यों है कि 'नार्मल' लड़के विकलांग लड़कियों को यौन साथी के रूप तो स्वीकार करते हैं परन्तु शादी की बात आते ही या तो साफ़ इंकार कर देते हैं, या उस बात को पूरी तरह नज़रअंदाज कर देते हैं? ये बातें मुझे निराश करती हैं।

विकलांग महिलाओं और पुरुषों के लिए सबसे मुश्किल संवाद यौनिकता से जुड़े होते हैं क्योंकि यौनिकता का मुद्दा उनकी शारीरिक अपंगता की तरह उनके सामने मुंह बाए खड़ा नहीं होता। भारतीय समाज में महिलाओं के लिए यौनिकता शादी के दायरे में ही परिभाषित की जाती है। यह विडम्बना ही है कि विकलांग पुरुषों को 'ग़रीब' सामान्य महिलाएं साथी के रूप में मिल जाती हैं। परन्तु विकलांग महिलाओं को अपनी यौनिकता की अभिव्यक्ति करने वाले शब्द तक नहीं मिलते। एक ऐसी संस्कृति जहां किसी निश्चित 'मानक' से भेद को 'लीक से हटना' समझा जाता हो वहां एक 'क्षीण' शरीर एक अधूरेपन का प्रतीक बन जाता है। एक सुन्दर शरीर का प्रचलित मिथक क्षीण स्त्री शरीर को 'अमान्य' और 'गैर-औरताना' साबित कर देता है।

सामाजिक मानदंडों में भी विकलांग व्यक्तियों की यौनिकता को लेकर एक ख़ामोश साज़िश व्याप्त है; इस यौनिकता को उचित तवज्जो नहीं दी जाती। एक पितृसत्तात्मक समाज में विकलांग महिलाओं को विशेष रूप से दरकिनार किया जाता है। इस सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव को बनाए रखने में एक ऐसा माहौल मदद करता है जो केवल सम्पूर्ण और स्वस्थ शरीर वालों लोगों के हितों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसमें विकलांग व्यक्तियों के लिए मूल सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं होतीं। यह सामाजिक अवहेलना विकलांग व्यक्तियों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दमन के अनुभवों के साथ मिलकर उन्हें अपनी बात कहने की जगह, सत्ता और आवाज़ से वंचित रखती है। इसके कारण मानदंडों के गहरे पैठे आदर्श, जो विकलांगों को एक सामाजिक मौजूदगी और पहचान बनाने से रोकते हैं को भी तोड़ना या चुनौती देना नामुमकिन हो जाता है।

मेरे दिमाग में विकलांगता के मायने किन्हीं टूटे-बिखरे व्यक्तियों से नहीं हैं; क्योंकि एक अनुपयुक्त समाज सिर्फ़ नियामक व्यवस्थाओं की कार्यकुशलता के अनुसार चलता है और उन्हीं के आर्थिक और राजनैतिक हितों को पूरा करता है। दुर्भाग्य से अपने साथ 'विकलांगता' की चिप्पी लेकर चलने वाली महिलाओं के लिए ये 'कलंक' एक ऐसा अलगाव पैदा करता है जिसके नतीजतन उनके मन में एक मायूसी और दुख की भावना घर कर लेती है। अलगाव का ये अहसास अक्सर उन्हें किसी 'कमी' को दबाने या उसे न पहचानने के लिए मजबूर कर देता है।

इस सोच की जड़ें भारतीय पौराणिक उदाहरणों में भी देखी जा सकती हैं। रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने रावण की बहन 'शूर्पनखा' की नाक काट डाली थी जो उससे अपने प्रेम का इज़हार करने आयी थी। लक्ष्मण ने शूर्पनखा के इस 'अमान्य' व्यवहार की सज़ा उसे विकलांग बनाकर दी। धर्म ग्रन्थ की यह घटना भारतीय मानसिकता में व्याप्त 'विकलांगता' और गैर-औरताना रूप के बीच संबंध को उजागर करती है।

कुछ इसी तरह का ऐतिहासिक उदाहरण उत्तरी भारतीय पंजाबी संस्कृति में भी देखने को मिलता है जहां लड़कियां अपने ममेरे-फुफेरे भाई-भतीजों के साथ मेल-मिलाप तो रखती हैं परन्तु उनके साथ एक ही कमरे में सोने की उन्हें इज़ाज़त नहीं होती। दूसरी ओर विकलांग लड़कियों के लिए इस तरह की कोई मनाही नहीं होती क्योंकि उन्हें यौन रूप से सुरक्षित माना जाता है या कहें कि उन्हें यौनिकता-रहित समझा जाता है।

यह मान लिया जाता है कि वे इस आपसी मेल मिलाप को किसी यौन प्रस्ताव या इच्छा के तौर पर नहीं देखेंगी। ऐसा लगता है जैसे कि विकलांग लड़की इन सब भावनाओं से ऊपर कोई और ही जीव है; वह दूसरी लड़कियों की तरह नहीं है और वो दूसरों को 'कुछ गलत' करने के लिए उकसाएगी या आकर्षित नहीं करेगी।

एक जानकार दोस्त सरला ने मुझे बताया कि अपने मौसेरे भाई आदर्श के कमरे में सोना उसे अच्छा लगता था। पर उसे बहुत देर बाद समझ में आया कि उसका परिवार उसकी यौनिकता को नकार रहा था और इसलिए उसे यह विशेष 'छूट' दी जा रही थी। कुछ समय बात आदर्श ने उसकी यौनिक इच्छाओं को पूरी करने का प्रस्ताव रखा बशर्ते यह बात गोपनीय रखी जाए। तब सरला को महसूस हुआ कि वह एक 'गैर-यौनिक वस्तु' की तरह देखी जा रही थी। विडम्बना यह है कि यह घटना विकलांग लड़कियों के यौनिक शोषण की अवहेलना की सच्चाई को उजागर करती है जिसका सामना वे नियमित रूप से करती हैं। विकलांग लड़कियों के साथ परिवार के भीतर होने वाले यौन शोषण और नियंत्रण का यह सटीक उदाहरण है।

अपने अनुभव बांटते हुए अनेकों औरतों ने घर के अंदर रिश्तेदारों और जानकारों के हाथों हिंसा और शोषण के डर की बात साझा की है। हालांकि इस लिहाज़ से परिवार सीधे तौर पर विकलांग लड़कियों के लिए ज़िम्मेदार होता है। पर यह भी सही है कि इन लड़कियों के मन में एक डर की भावना भी इसी परिवार के अन्दर पैदा होती है क्योंकि शोषण और हिंसा के उनके अनुभवों को घर वाले महज़ कल्पना मानते हुए नज़रअंदाज़ कर देते हैं। एक अन्य दोस्त नीलिमा ने बताया, 'मैंने अपनी मां को जब अपने मामा के बारे में बताना चाहा तो उन्होंने विश्वास न करते हुए कहा— 'अरे वे तुम्हें क्यों तंग करेगा? उसको लड़कियों की कमी है क्या? तुमने कभी खुद को शीशे में देखा है?"

यह मान्यता कि विकलांगता और यौनिकता परस्पर अलग बातें हैं, विकलांग व्यक्तियों की सामान्य यौन इच्छाओं को न सिर्फ़ नज़रअंदाज़ करती है बल्कि उन्हें दूसरों की तरह यौन प्राणी मानने से भी इंकार करती है। ख़ुद अपने बारे में समझ बनाने के लिए यह ज़रूरी होता कि हम यह मानें कि हम सम्पूर्ण होकर ही पूरी तरह जी सकते हैं। परन्तु यौनिकता और विकलांगता के बीच का विरोधाभास और सांस्कृतिक अवमूल्यन इस चुप्पी को और बढ़ाते हुए विकलांग

व्यक्तियों के लिए एक सकारात्मक आत्म-पहचान विकसित के रास्ते में मुश्किलें पैदा करता है।

यहां मुद्दा यह है कि विकलांग व्यक्ति को अपनी यौनिकता स्थापित करने और उसे अपनी मर्ज़ी के अनुसार रचने के लिए संघर्ष करना होगा। यहां यह धारणा गलत है कि समाज में यह मान लिया जाता है कि विकलांग महिला की कोई यौनिकता होती ही नहीं है। उन्हें 'बच्चों की तरह' और 'यौनिकता-रहित' मान लिया जाता है और उनके द्वारा व्यक्त किसी भी यौन इच्छा को 'बहुत ज़्यादा' या 'विकृति' समझा जाता है। रोहतक बलात्कार मामले में यह माना गया है कि विकलांग महिला खुद अपने शोषण के लिए ज़िम्मेदार है। पर सच्चाई यह है कि हिंसा करने वाले यह जानते है कि ऐसी स्थितियों में वे आसानी से बच निकलेंगे। चूंकि विकलांगता अनेक स्तरों पर होती है इसलिए हिंसा की इन घटनाओं को समझना और इन

पर बात करना आसान नहीं होता। इसलिए यह ज़रूरी है कि हम विकलांग महिलाओं के साथ परिवार, पड़ौस और समाज में होने वाली हिंसा और शोषण की सच्चाई को समझें और इस पर खुलकर बात करें।

अनिता घई *दिल्ली विश्व विद्यालय में पढ़ाती हैं और विकलांग अधिकार कार्यकर्ता हैं।*

आत्मा की शांति

पूनम तुषामड़

वह बुला रही थी
पड़ोस की सभी लड़कियों को
उन्हें प्यार से बैठाती
तिलक लगाती
पांव पखारती,

सड़क पर झाड़ू लगाती
छोटी लड़की पर पड़ी
और उसके प्रति भी
मेरी संवेदना उमड़ पड़ी

मैंने उनसे कहा –
इसे भी बुलाकर खिला दो
पुण्य लगेगा
इतना सुनते ही सूख गई
उसकी अश्रु धारा
सिकुड़ गई भौंहे
छि, यह तो भंगी है।"

पूनम तुषामड़ *दलित कवयित्री हैं।*